UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
General Certificate of Education Advanced Subsidiary Level

HINDI LANGUAGE **8687/02**

Paper 2 Reading and Writing **October/November 2013**

1 hour 45 minutes

Additional Materials: Answer Booklet/Paper

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

If you have been given an Answer Booklet, follow the instructions on the front cover of the Booklet.
Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.

Answer **all** questions.
Write your answers in **Hindi** on the separate answer paper provided.
Dictionaries are **not** permitted.
You should keep to any word limits given in the questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.
The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

पहले नीचे दिये निर्देश पढ़िए

यदि आपको उत्तर-पुस्तिका दी गयी है तो उसके पहले पृष्ठ के निर्देशों का पालन करें।
परीक्षा के लिए आप जो भी काम दें उस पर केन्द्र संख्या, छात्र संख्या और अपना नाम लिखें।
गहरी नीली या काली स्याही वाली कलम से कागज़ के दोनों ओर लिखें।
स्टेपलर्, पेपर्-क्लिप्, हाइलाइटर्, गोंद या करेक्शन्-फ़्लुइड् का प्रयोग न करें।

सभी प्रश्नों के उत्तर दें।
अलग से दी गयी उत्तर-पुस्तिका में अपने उत्तर हिन्दी में लिखें।
शब्दकोश का प्रयोग मना है।
उत्तर, प्रश्नों में दिये गये शब्दों की संख्या तक ही सीमित रखें।

परीक्षा के अंत में अपने सभी पृष्ठों को सुरक्षित रूप से एक साथ धागे से बाँध दें।
प्रत्येक प्रश्न या प्रश्न-अंश के अंत में उसके निर्धारित अंक कोष्ठकों [ ] में दिये गये हैं।

This document consists of **5** printed pages and **3** blank pages.

DC (SJW) 82864
© UCLES 2013

UNIVERSITY *of* CAMBRIDGE
International Examinations

[Turn over

भाग 1

निम्नलिखित आलेख को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

समाज का संदर्भ

कहने को समाज शब्द एक साधारण, शुष्क, भावना-रहित सा शब्द प्रतीत होता है परन्तु यदि ध्यान से देखा जाए तो इसके दबे-छुपे कोनों में न जाने कितनी भावनाएं, भिन्न-भिन्न प्रकार के सम्बंधों के मध्य, स्पंदित हैं। यह विशाल समाज इन्हीं भावनाओं की नन्हीं इकाइयों से जन्मा है। यदि समाज शब्द के मूल में प्रेम भावना न होती तो दो लोगों के जुड़ने से परिवार कैसे बनता? दो परिवारों के स्नेह सम्बंधों के आगे बढ़ने से ही धीरे-धीरे समाज ने आकार लिया। यह प्रेम, और निकटता शारीरिक सुरक्षा तथा मानसिक शक्ति की ज़रूरत के कारण उपजा और फिर मनुष्य की परम आवश्यकता बन बैठा।

वस्तुतः आधुनिक समाज एक संगठन है जिसमें अरसे से चलते-चलते कठोर हो गयी मान्यताएं कभी-कभी पारस्परिक सम्बंधों के लचीलेपन को तोड़ देती हैं। मनुष्य, समाज के स्थापित नियमों के सामने, अपने आपको विवश अनुभव करता है। ऐसे में वह निज विचारों तथा समाज के लक्ष्यों के मध्य, स्वयं को चक्की के दो पाटों के बीच पाता है। जहाँ समाज, एक ओर हमें सुरक्षित रखता है वहाँ दूसरी ओर, हमारे विकास, नये मूल्यों की स्थापना तथा नवीन प्रयासों व धारणाओं के सम्मुख बाधा बन कर खड़ा हो जाता है।

समाज की रचना कोई आधुनिक मानवीय अनुसंधान नहीं, अपितु यह एक ऐसी पुरातन व्यवस्था है जो अन्य जीव-जन्तुओं उदाहरणतः चीटीं, हाथी, वानर आदि में भी पायी जाती है। अन्तर है तो इतना मात्र कि इनमें बंधन के बिना पूरे समूह की सुरक्षा की भावना पायी जाती है। मनुष्य समाज को यदि इस संदर्भ में देखा जाए तो यह आज भी आदिम रूढ़ियों और परम्पराओं में उलझा हुआ है। एक साधारण व्यक्ति, अपने प्रमुखों द्वारा हांकी गई भेड़ों से अधिक, कुछ भी नहीं है। हमारे अग्रजन चरवाहे के रूप में हमें हांकते हुए, पथ-प्रदर्शन के नाम पर अपना उल्लू सीधा करते हुए हमें एक ऐसी अवस्था तक ले आए हैं कि मनुष्य समाज या जन्तुओं के समूह में, यदि कोई भेड़ निश्चित पगडंडी से हटी नहीं कि भटकी अपने रेवड़ से और करार कर दी गई बागी।

एक विकसित व शिक्षित समाज में लकीर के फ़कीरों के लिए कोई स्थान नहीं है। आदर्श समाज, भेड़ों का रेवड़ नहीं है। मेरे विचार से समाज या परम्पराएं ग़लत नहीं होती, ग़लत होता है उनका निरूपण तथा प्रतिपादन। अच्छे या बुरे समाज-निर्माण की ज़िम्मेदारी हमारी है, क्योंकि हम ही समाज की इकाई हैं। समाज के भले-बुरे दोनों चेहरों के पीछे हम सबका हाथ है।

© UCLES 2013

1 नीचे दी गयी प्रत्येक परिभाषा के लिए उपर्युक्त आलेख में लिखित उन शब्दों या उक्तियों को लिखिए जिनसे उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

उदाहरणः धड़कता (para. 1)

उत्तरः स्पंदित

(a)	रूप	(para. 1)	[1]
(b)	संस्था	(para. 2)	[1]
(c)	सामने	(para. 2)	[1]
(d)	नियोजन	(para. 3)	[1]
(e)	व्याख्या	(para. 4)	[1]

[पूर्णांकः 5]

2 निम्नलिखित प्रत्येक शब्द या उक्ति का प्रयोग करते हुए अपने शब्दों में ऐसे वाक्य बनाइए जिससे उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए।

उदाहरणः भेड़ों का रेवड़ (para. 4)

उत्तरः मानव-समूह एक भेड़ों का रेवड़ नहीं है जो आंख बंद करके एक दूसरे के पीछे चलता रहे।

(a)	निकटता	(para. 1)	[1]
(b)	अरसे से	(para. 2)	[1]
(c)	उल्लू सीधा करना	(para. 3)	[1]
(d)	पगडंडी	(para. 3)	[1]
(e)	लकीर के फ़कीर	(para. 4)	[1]

[पूर्णांकः 5]

3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए। आलेख के वाक्यों की नकल न करें।

(प्रत्येक प्रश्न के अंत में अंकों की संख्या दी गयी है। इसके अतिरिक्त आपके उत्तरों की भाषा और शैली के लिए 5 अंक निर्धारित किये गये हैं।) [पूर्णांकः 15+5=20]

(a) समाज का जन्म किस लिए हुआ? कारणों सहित उत्तर दीजिए। [3]

(b) समाज मनुष्य के जीवन में कठिनाइयाँ कैसे उत्पन्न कर सकता है? [2]

(c) जन्तु समाज के तीन नियमों का उल्लेख कीजिए। [4]

(d) मानव और भेड़ों की तुलना कैसे और क्यों की गयी है? लिखिए। [3]

(e) 'परम्पराएं गलत नहीं होती, गलत होता है उनका निरूपण' इस वाक्य से लेखक का क्या तात्पर्य है? [3]

[पूर्णांकः20]

भाग 2

अब इस द्वितीय आलेख को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए।

परम्परा का अभिनय

यदि किसी देश के रंगमंच पर खड़े होकर, उसकी सांस्कृतिक मंचसज्जा पर निगाह डालें तो, ज्ञात होगा कि 'परम्परा जड़ता की दासी नहीं है।' नवीकरण, इसका सहज गुण है। वास्तव में परिवर्तन की निरन्तर प्रक्रिया गतिशीलता लाती है और गतिशीलता ही जीवन है। सृष्टि की चराचर वस्तुओं की भांति, यह प्रक्रिया, संस्कृति में भी दिखाई देती है। जब परम्पराएं असामयिक अनुपयोगी एवं अशक्त होने के कारण, दम तोड़ने लगती हैं, तब संस्कृति के नये रूपों की तलाश आरम्भ हो जाती है।

नवीनता आकाश से नहीं टपकती। यह अतीत से रस लेकर, संस्कृति की गोद में, जन्म लेती है। नवीनता से ही परम्परा में गतिशीलता आती है। ऐसी परम्परा,जिसमें विकास की शक्ति और गति नहीं होती, वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकती। परम्परा नयेपन की निरन्तर तलाश का नाम है। परम्परा से ही, प्रयोगों के नये आयाम, प्रतिष्ठित होते हैं। ये प्रयोग ही उन्नत होकर परम्परा बन जाते हैं।

परम्परा और प्रयोग में कार्य-कारण का सम्बंध है। अर्थात् वर्तमान परिस्थिति पूर्वकालीन परिस्थिति का प्रतिफल है और पूर्व की परिस्थिति अपने से पहले की स्थिति का परिणाम है। प्रयोग परम्परा को परखने की कसौटी है। इस मंथन और टकराव की प्रक्रिया में कमज़ोर मूल्य टूट जाते हैं। अतः प्रयोग, परम्परा की त्रुटियों को दूर करने के लिए एक नया रूप लेकर, नयी अवस्था की नींव रखता है। प्रबुद्ध कलाकार रूढ़ियों को तोड़कर, स्वस्थ परम्परा का विकास करता है और उसे नया रूप, नया रंग व नये साधन प्रदान करता है। सत्य तो यह है कि नयी परम्पराएं भी कालांतर में पुरानी पड़ जाती हैं और परम्पराओं का यह क्रम निरन्तर चलता रहता है।

प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति की चेतना विकासोन्मुखी रहती है। बँधी-बँधाई परम्पराओं में रह कर उसका जी घुटने लगता है। अतः वह नवीनता की संभावनाओं में विश्वास रखता है। आधुनिक मानवीय-जीवन तेज़ी से बदल रहा है। यह बदलाव सांस्कृतिक परिवर्तन है जो व्यक्ति के चिन्तन, रहन-सहन तथा व्यवहार में दिखाई देता है। नये युग की नयी चेतना के अनुसार परम्परा भी नये मोड़ लेती है। जब-जब नयी चेतना का संक्रमण होता है, तब-तब मनुष्य के सांस्कृतिक-तेवर बदलते हैं और भाव-भंगिमाएँ नये रूप में विकसित होती हैं।

4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दीजिए। आलेख के वाक्यों की नकल न करें।
(प्रत्येक प्रश्न के अंत में अंकों की संख्या दी गयी है। इसके अतिरिक्त आपके उत्तरों की भाषा और शैली के लिये 5 अंक निर्धारित किये गये हैं।) [पूर्णांकः 15+5=20]

(a) 'परम्परा जड़ता की दासी नहीं है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए। [3]

(b) इस आलेख में नए रूपों पर इतना महत्त्व क्यों दिया गया है? लिखिए। [2]

(c) परम्परा और प्रयोग में कार्य-कारण के सम्बंध का विस्तृत वर्णन कीजिए। [4]

(d) सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रभाव पर प्रकाश डालिए। [3]

(e) 'परम्परा बनाने व तोड़ने' में मनुष्य के योगदान का उल्लेख कीजिए? [3]

[पूर्णांकः 20]

5 (a) उपर्युक्त दोनों आलेखों के आधार पर सामाजिक विचारों के विकास की प्रक्रिया का विश्लेषण कीजिए। [10]

(b) किसी पुरानी परम्परा को नया रूप देने के लिए आप क्या कदम उठायेगें? [5]

इन दोनों प्रश्नों के उत्तर 140 शब्दों की सीमा तक ही रखिए।

[भाषा और शैली: 5]
[पूर्णांकः 20]

BLANK PAGE

© UCLES 2013

BLANK PAGE

© UCLES 2013

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

University of Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.